

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

भिन्न वाली ना'त प्वानी

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येड रिसाला (32 स-इलात) पूरा पढ कर अपनी आभिरत का लवा कीजिये.

दुइद शरीफ़ की इमीलत

उठरते सय्यिदुना उअय्यिदने कअूअ رضى الله تعالى عنه ने बारगाडे रिसालत में अर्ज की, (इराईज वगैरा के एलावा) में अपना सारा वक्त दुइद प्वानी में सई करूंगा. तो सरकारे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया, “येड तुम्हारी इकियों को दूर करने के लिये काई और तुम्हारे गुनाहों के लिये कइफ़ारा हो जायेगा.”

(तिरमिजी, जिल्द:4, स-इला:207, इदीस:2465, दारुल इक, बैरुत)

तेरी एक एक अदा पे अै प्यारे

सौ दुइदें इिदा उठार सलाम

صَلُّوا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

نا'त प्वानी आ'ला ६-२जे की थीज है. अय्यी अय्यी निय्यतें कर के ना'त शरीफ़ पढना और सुनना बाईसे सवाबे आभिरत और मूजिबे भैरो ब-२-कत है. मगर हर अमले भैर के लिये कुछ आदाब छोते हैं ईसी तरड ना'त प्वानी के ली हैं. यकीनन वोड बडा भुश नसीब है जिस को भुश एल्लानी की ने'मत मिले और वोड इस का सौ ईसद दुइदुस्त ईस्ते'माल करते हुअे एप्लास के साथ ना'त प्वानी करे. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारे यहां अेक से अेक भुश आवाज ना'त प्वान ईहें जो आशिकाने रसूल के कुलूब को गरमाते और उन्हें ईशके मुस्तईा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم में तउपाते हैं. या अल्लाड عَزَّوَجَلَّ मडभूअे صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के सना प्वानों की नउरे बढ और हुअे जाड व सरवत से डिफ़ाजत इरमा. या अल्लाड عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते ईन को और ईन के सदके मुज गुनउगारों के सरदार अतारे बढ अतवार को बे हिसाब बभश दे. या अल्लाड عَزَّوَجَلَّ ! मुस्तईा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की मइरत इरमा.

तू बे हिसाब बभश के हें बे शुमार जुर्म
देता हूं वासिता तुजे शाडे डिजाज का

أَمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْإِيْمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इल्मी गीत का गुमान !

कुछ अरसे से अेक तढीली देअने में आ रडी है और वोड येड के मभूस टेकनिक के साथ बमअ जिकुल्लाड ईको साउन्ड पर कुछ ईस तरड ना'त प्वानी की जा रडी है के सुनने वाले को मडसूस छोता है के मूसीकी के साथ ना'त शरीफ़ पढी जा रडी है बडे जिस की ना'त प्वानी की तरइ तवज्जोड न हो और वोड अगर सिई सरसरी तौर पर जिकुल्लाड वाली ना'त शरीफ़ की आवाज सुने तो शायद येडी समजे के معاذ الله عَزَّوَجَلَّ गाना बज रडा है. येड बात आशिकाने रसूल के लिये कितने बडे सदमे की है के भीठे भीठे आका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की सना प्वानी को मडज पढनेवाले के अन्दाज के सभब कोई इल्मी गीत समज बैठे !

अल्लाड, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ के नबी ﷺ से इरियाड है नइस की बदी से
ईमां पे बेडतर मौत ओ नइस तेरी नापाक जिन्दगी से

तर्क कब अइजल होता है ?

मुर्व्वज्ज जिक्वाली ना'त प्वानी के जवाज व अदमे जवाज में उ-लमाअे अडले सुन्नत का ईप्तिलाइ यल रडा है. बा'ज मुहाड (जाईज) केड रहे हें और बा'ज ना जाईज व हराम. जब कमी अैसी सूरत पैदा हो तो आइय्यत ईजतिनाब (या'नी बयने) डी में हुवा करती है. युनान्ये मेरे आका आ'ला उठरत, ईमामे अडले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अजीमुल ब-२-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजट्टे दीनो मिल्लत, डामीअे सुन्नत, माडीअे बिद्अत, आदिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे भैरो ब-२-कत, उठरते अल्लामा मौलाना अल्लाज अल डाइज अल कारी अशशाड ईमाम अडमद रजा पान की बिदमते सरापा अजमत में अर्ज की गई, “(जब) सुन्नत व मकडुड में तआरुज (या'नी टकराव) हो तो क्या करना याहिये ?” इरमाया: “तर्क औला (या'नी बयना अइजल) है.” (अडकामे शरीअत, स-इला:228, नूर पब्लीशिंग हाउस, इराश पाना दडली) देभा आपने ! सुन्नत व मकडुड में उ-लमाअ का जब ईप्तिलाइ हो जाअे तो तर्क अइजल होता है. तो इर जहां मुहाड और हराम में तआरुज (टकराव) हो वहां बयना क्यूं न अइजलतरीन ठडरेगा ! येड तो अमल में अेडतियात का पडलू है और तलबगारे रिजाअे रब्बुल ईज्जत को मजीद दलाईल की डजत नडीं.

नबी ﷺ की ना'त की मडकिल सजाना उम न छोड़ेंगे

येह ना'रा या रसूलव्हाउ ﷺ लगाना उम न छोड़ेंगे

मुसल्मानों को मुनाफिरत से बचाधये

फिक्रही मसा'ल में उ-लमाअे किराम का इफ्तिलाफ़ को'र न'रि और इस में को'र कबाहत भी न'रि मगर “मुस्वजा जिक्वाली ना'त प्वानी” कम अज कम पाक व हिन्दवालों के लिये अेक नया तरीका है और इस की वजह से अवाम व भवास के अेक तभके को तशवीश है. जभ किसी अैसे काम से मुसल्मानों में नफ़रत की केफ़ियत जनम लेने लगे जिस का करना फ़र्ज, वाजिब या सुन्नते मुअक़्कदा न हो तो उस काम को तर्क करना होगा अगरे अफ़्जल व मुस्तहब हो. युनान्चे अेक मकाम पर मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ عَلَيْهِ मुसल्मानों के इत्तिहाद की अडभियत को उजागर करने के लिये इरमाते हैं: “लोगों की तालीफ़े कल्भी (या'नी हिलजू'र) और उन को मुजतमअ (मुत्तहिद) रभने के लिये अफ़्जल को तर्क करना इन्सान के लिये जा'रि है ता के लोगों को नफ़रत न हो जाअे जैसा के नभिय्ये करीम, रउिकुर्रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ ने बैतुव्हाउ शरीफ़ की इमारत को इस लिये उजरते सय्यिदुना इब्राहीम भलीलुव्हाउ عَلَيْهِ وَالسَّلَامِ की बुन्यादों पर का'रम रभा ताके नौ मुस्लिम होने की वजह से अडले कुरैश इस की न'रि बुन्यादों पर की जानेवाली ता'मीर को नफ़रत की निगाह से न देभें. तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इजतिमाअ (इत्तिहाद) को का'रम रभने की मस्लहत को मुकद्दम समजा.” (इतावा र-जविय्या, जिल्द:7, स-इहा:680)

तरीके मुस्तफ़ा ﷺ को छोडना है वजहे बरबादी

इसी से कौम दुन्या में हु'रि भे इकितदार अपनी

अंगुशत नुमा'रि के अरबाब मक़्कद हैं

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ عَلَيْهِ अेक और मकाम पर मुसल्मानों को आपसी नाराजगी और ग्रूप बन्दी से बयाने के लिये रकम तराज हैं: “अेक नुक्ता याद रभना याहिये के अपने मुल्क और शहर में आम मुसल्मानों की जे वज़्अ (या'नी ज़ाहिरि डालत) और तर्ज व तरीका हो उसे छोड देना और दूसरी वज़्अ जे तशहीर (या'नी शोहरत) और अंगुशत नुमा'रि का सबभ है उसे इफ्तियार करना मक़्कद है. युनान्चे उ-लमाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं: अपने शहर की आदत और तरीकअे कार से बाहर हो जाना वजहे शोहरत और मक़्कद है.” (इतावा र-जविय्या, जिल्द:22, स-इहा:193)

मैं वोड शा'रि न'रि के यां'द केड हूं उन के येडरे को

मैं उन के नकशे पा पर यां'द को कुरबान करता हूं

फ़ित्ने का भौफ़ हो तो मुस्तहब तर्क करना होगा

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ عَلَيْهِ की भिदमत में मुस्तहब काम के करने के बारे में इस्तिफ़्ता पेश हुवा, यूंके इी जमाना उस अमे मुस्तहब पर हिन्द के अन्दर अमल करने में फ़ित्ने का अेडतिमाल था लिहाजा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने इशा'द इरमाया: जहां इस का रवाज है मुस्तहब है, इ'न बलाद (हिन्द के शहरों) में के इस का (नाम व) निशान न'रि, अगर वाकेअ हो (या'नी को'र करे) तो जुहू'ल (या'नी ज़ाहिल लोग) हंसें, और मस्अलअे शर'य्या पर हंसना अपना दीन बरबाद करना है, तो यहां इस पर इक़दाम (या'नी अमल) की ड़ाजत न'रि. फ़ुद अेक मुस्तहब बात करनी और मुसल्मानों को अैसी सप्त बला (या'नी शरीअत के मसा'ल पर हंसने की आइत) में ड़ालना पसन्दीदा न'रि. (इतावा र-जविय्या, जिल्द:22, स-इहा:603)

इलाही ﷻ दे मेरे हिल को गमे इशक

नशाते दहर से हो जा'रि नाभुश

भुश भबरी सुनाओ, नफ़रत न हिलाओ

मीठे मीठे इस्लामी भा'रयो! पेश कर्दा जुअ'य्यात से اَظْهَرُ مِنَ الشَّمْسِ وَآيِنُ مِنَ الْأَمْسِ (या'नी सूरज की तरह रौशन और शाम की तरह ज़ाहिर) हुवा के लोगों का मुस्वजा तरीका जिस की शर-अन मुमानअत न हो उस से डट कर को'रि भी अैसा फ़ै'ल न किया जाअे जिस से लोगों में नफ़रतें फ़ै'लें बल्के किसी मुस्तहब काम से भी अगर मुसल्मानों में फ़ूट पडती हो, फ़ित्ने भडे डोते डों, नाराजगियां और दूरियां पैदा डोती डों, लोग भदज्ज डोते डों तो मुसल्मानों की हिलजू'रि की भातिर उस मुस्तहब को तर्क करना डोगा. मुसल्मानों को नफ़रत व वडशत से बयाना बडोत ज़रूरी है. जैसा के हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोडतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशा'द मुअज़्जम है: يَا'नी भुश भबरी सुनाओ और (लोगों को) नफ़रत न हिलाओ. (भुभारी, जिल्द:1, स-इहा:42, डदीस:69, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत, इतावा र-जविय्या, जिल्द:22, स-इहा:339) मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ عَلَيْهِ का इरमाने इब्रत निशान है: “मुसल्मानों की आदत का भिलाफ़ करना और वडशत हिलाना येह जा'रि न'रि.”

(इतावा र-जविय्या, जिल्द:22, स-इहा:339)

शब त्तर सोने डी से गरज थी तारों ने उजार दांत पीसे
दिन त्तर भेलों में भाक उडाई लाज आई न जरों की डंसी से

गुनाहों का दरवाजा खुल गया है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मुरव्वज जिक्वाली ना'त प्वानियां हमारे यहां के लोगों के मिजाज के मुताबिक नहीं जल्मी तो मुसल्मानों में ईस्तिराक व ईन्तिशार फैल रहा है, उ-लामाअे किराम और अवाम के दरमियान नफरतों की दीवार काईम हो रही है, आपस में बुज्जो ईनाद की जड़ें उस्तुवार हो रही हैं, गीबतों, युग्लियों, ईल्जाम तरशियों, दिल् आजारियों और बद्दगुमानियों का अेक तूफान भडा हो गया है जिस के सबभ कबीरा गुनाहों और जहन्नम में ले जाने वाले कामों का अेक बडोत भडा दरवाजा खुल चुका है. ईस की ताजातरीन मिसाल येह है के बाबुल मदीना कराची में होनेवाली अेक अजीमुशशान मडफिले ना'त में जब जिक्वाली ना'त शुइअ हुई तो अेक मशहूर व मा'इफ मोडतरम सुन्नी आलिम ने ईस पर टोका, ईस पर मोअजूज ना'त प्वान मंय से उतर कर यल दिये. दूसरे ना'त प्वान पढने आअे तब भी वोडी अन्दाज था तो यूके ईन आलिम साहिब के नजदीक अेक गुनाह का काम हो रहा था ईस लिये वहां से यला जाना ईन के लिये वाजिब था, लिहाजा येह भी उठे और मडफिल से तशरीफ ले गअे. नतीजतन उन आलिम साहिब के मुरीदीन व मुहिब्बीन और जिक्वाली ना'त शरीफ के काईलीन व शाअेकीन के दरमियान जडप हो गई और नौबत हाथापाई तक जा पड़ोयी. आह ! आह ! आह !

दिल के इइले जल उठे सीने के दाग से

ईस घर को आग लग गई घर के यराग से

सुन्नत पर अमल के हराम होने की सूरत

आह ! शैतान नेकियों का त्तरम दिला कर भी कैसे कैसे घिनौने भेल भेलता है के मुसल्मानों को बसा अवकात नईली कामों की भातिर ईजाअे मुस्लिम जैसे हराम कामों में जोंक देता है ! शरीअते ईस्लामिया अेडतिरामे मुस्लिम करनेवालों की पजीराई और ईजाअे मुस्लिम के ईर्तिकाब की सप्त डौसला शिकनी करती है. मुसल्मान को ईजा पड़ोयती हो तो सुन्नत पर अमल करना भी बा'ज सूरतों में हराम हो जाता है. म-सलन नमाजे इज व जोहर में तुवाले मुइस्सल (सूरतुल हुजुरात ता सूरतुल बुइज को तुवाले मुइस्सल केहते हैं) से पूरी दो सूरतें हर रकअत में सूरअे फातेहा के बा'द अेक अेक सूरत पढनी सुन्नत है. अेक कौल के मुताबिक इजो जोहर में सूरअे फातेहा के ईलावा मजमूई तौर पर यालीस या पयास और दूसरी रिवायत के मुताबिक साठ से ले कर सौ आयतें पढी जाअें. अलबत्ता कोई मरीज या अैसा आदमी नमाज में शामिल हो जिस को जल्दी है और देर होने की सूरत में उस को तकलीफ होगी तो अैसी सूरत में तकलीफ देह उद तक तवील किराअत करना हराम है. मजकूरा मस्अला और उस के मुतअद्लिक मुन्दरिजअे जैल जुजईया जिक्वाली ना'त प्वानी का हुक्म बयान करने के तौर पर नहीं, मजज तप्वीफ (या'नी उराने) के लिये हैं के कही हमारे ना'त प्वान ईजाअे मुस्लिम के मुर्तिकिब न हो रहे हों क्यूं के बा'ज अवकात नेकी का काम नजर आनेवाली बात भी गुनाह का काम होती है जिस का हमें ईल्म नही होता युनान्ये मेरे आका आ'ला उजरत ईतावा र-जविया जिह्द:6, स-इहा:325 पर इरमाते हैं : “यहां तक के अगर उजार आदमी की जमाअत है और सुह्र की नमाज है और भूब वसीअ वक्त है और जमाअत में 999 आदमी दिल् से याहते हैं के ईमाम बडी बडी सूरतें पढे मगर अेक शप्स बीमार या जईफ बूढा या किसी काम का जइरत मन्द है के उस पर तत्वील (या'नी तवालत) बार होगी उसे तकलीफ पड़ोयेगी तो ईमाम को हराम है के तत्वील (या'नी तवालत) करे बल्के उजार में ईस अेक के लिहाज से नमाज पढाअे जिस तरह मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने सिई उस औरत और उस के बअ्ये के भयाल से नमाजे इज मुअव्वजतैन (या'नी सूरतुल इलक और सूरतन्नास) से पढा दी. उदीसे (मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) में है : और मुआज ईब्ने जबल صلى الله تعالى عنه पर तत्वील में सप्त नाराजी इरमाई यहां तक के रुपसारअे मुबारक शिहते जलाल से सुर्भ हो गअे और इरमाया: “क्या तू लोगों को इत्ने में डालनेवाला है ! क्या तू लोगों को इत्ने में डालनेवाला है ? क्या तू लोगों को इत्ने में डालनेवाला है अै मुआज ?” (सहीह बुभारी, जिह्द:2, स-इहा:902, कदीमी कुतुब भाना, बाबुल मदीना कराची)

मुसल्मानों को इत्ने से बचाधये

भीठे भीठे ना'त प्वानो ! अल्लाह عزوجل आप का मुंह सलामत रभे. बुदारा ! मान जाईये ! और सिई पुराने अन्दाज पर ना'तें पढने की तरकीब बनाईये. यकीनन हुन्या का कोई भी मुइतीअे ईस्लाम मुरव्वज जिक्वाली ना'त प्वानी को वाजिब नहीं कहेगा, जियादा से जियादा मुबाह (जाईज) कहेगा. अगर बिलइर्ज कोई मुइती साहिब मुस्तहब भी करार दे दें तब भी हावाते हाजिरा का तकाजा येही है के ईस अम्ने मुस्तहब को तर्क कर दिया जाअे क्यूंके ईस से मुसल्मानों के माबैन नइरत का सिख्लिवा यल निकला है और तन्हीरे मुस्लिमीन से बयने के लिये जइरतन मुस्तहब को तर्क कर देने का हुक्म है. जैसा के मेरे

आका आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** मुसल्मानों के दरमियान प्यार व मडब्बत की इजा काईम रखने का अेक म-दनी उसूल बयान करते हुअे इरमाते हैं : “ईत्याने मुस्तलब व तर्के गैरे औला पर मुदाराते पल्क व मुराआते कुलूब को अलम जाने और इत्ना व नफरत व ईजा व वलशत का बाईस डोने से बडोत बये.” (इतावा २-जविय्या तप्सीज शुदा, जिल्द:अवल, स-इला:14) ईस ईशदि रजवी के बा'द सरकारे आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** के माननेवालों को जिंक वाली ना'त शरीफ पढने से बयना डी याडिये ईस लिये के ईन का येड के'ल इत्ना व नफरत व ईजा व वलशत का बाईस बन रडा है और मुज सगे मदीना **عَنْ** और दीगर बे शुमार मुसल्मानों को ईस से सप्त तशवीश है. ईस ईशदि आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** का मफहूम येड है के मुस्तलब अमल को भी तर्क करना पडे तो कर दे मगर लोगों के दिलों की ખुशी को मुकदम रखे और इत्ना व इसाद का सभब बनने से दूर रहे. अेक दूसरे के खिलाफ येमगोईयां कर के इत्ने पडे करनेवालों को अद्लाड **عَزَّوَجَلَّ** से बडोत बडोत बडोत उरना याडिये. आप की ખैरખ्वाडी के जखूबे के तलत सरकारे आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** का अेक इतवा अर्ज करता हूं. येड इतवा मजकूरा मस्अले में शर-ई हुकम के तौर पर नडीं बल्के इत्ने के डवाले से अपनी अपनी ईस्लाल की तरफ तवज्जुह दिवाने के लिये है. मेरे आका आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** इत्ने से बयने की ताकीद करते हुअे नकल करते हैं के अद्लाड **عَزَّوَجَلَّ** पारड 30 सूरतुल बुरुज की आयत नम्बर 10 में ईशदि इरमाताहै :

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ
عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۱۰

तर्जमअे कन्जुल ईमान: बेशक जिन्होंने ईजा दी मुसल्मान मदीं और मुसल्मान औरतों को इर तौबा न की उन के लिये जलन्नम का अजाब है और उन के लिये आग का अजाब. (पारड 30, अल बुरुज:10)

ईस आयते मुकदसा के तलत मुइस्सिरे शडीर डकीमुल उम्मत डजरते मुइती अलमद यार खान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ** येड भी इरमाते हैं : मुसल्मानों में इत्ना ईलानेवाला बडा मुजरिम है, आलिम को याडिये के अैसा गैर जइरी मस्अला न बयान करे जिस से इत्ना डो.” (नूरुल ईरकान, स-इला:975)

मेरे आका आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** इतावा २-जविय्या जिल्द:21, स-इला:253 पर इरमाते हैं : मुसल्मानों में खिला वजडे शर-ई ईप्तिलाफ व इत्ना पैदा करना नयाबते शैतान (है.) (या'नी अैसे लोग ईस मुआमले में शैतान के नाईब हैं) डडीसे पाक में है : इत्ना सो रडा है उस के जगानेवाले पर अद्लाड **عَزَّوَجَلَّ** की ला'नत.

(कश्कुल खिफाय, जिल्द:2, स-इला:77, डडीस:1815, डारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरुत)

उ-लमाअ की तौडीन कुइ तक पडोंया देती है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! यूंके बा'ज उ-लमाअे किराम जिंक वाली ना'त शरीफ पढने को खईज और बा'ज मूसीकी वाले अन्दाज की वजड से ना खईज व डराम केडते हैं. खज के नइस पक्का मतलबी है, ईस ने वोडी इतवा पसन्ड करना है खे अपने मोकिफ का मुअय्यिद (ताईद करने वाला) है लिडजा ईस मुआमले से “इाईद उडते हुअे” मईद शैतान बा'ज लोगों की जभान से उ-लमाअे मानेईन की तौडीन पर मुशतमिल कलिमात जभान से निकलवा कर, डिलकूल बकने वालों की ताईद करवा कर ईन के ईमान से खेलेने की कोशिश कर रडा डोगा और ईन बेयारों को कानोंकान खबर भी न डोगी. लिडजा ईमान की खिफायत के खैरख्वाडाना खखूबे के तलत जिम्नन बा'ज खुजईय्यात अर्ज करता हूं : (1) मेरे आका आ'ला उजरत **رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَظِيمِ** इरमाते हैं : आलिमे दीन सुन्नी सडीडुल अकीदा के लोगों को डक की तरफ बुलाअे और डक बात बताअे मुडम्मदुरसूलुद्लाड **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का नाईब है. ईस की तलकीर **مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तौडीन और मुडम्मदुरसूलुद्लाड **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की खनाब में गुस्ताखी मूखिबे ला'नते ईलाडी व अजाबे अलीम है. रसूलुद्लाड **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरमाते हैं : “तीन शख्सों के डक को डल्का न खानेगा मगर मुनाफिक खुला मुनाफिक, अेक वोड जिसे ईस्लाम में बुढापा आया, दूसरा ईल्मवाला, तीसरा बादशाडे ईस्लाम आदिल.” (इतावा २-जविय्या, जिल्द:23, स-इला:648 तल 649) (2) “मौलवी लोग क्या खानते हैं” ईस (खुबे) से जइर उ-लमाअ की तलकीर (तौडीन) निकलती है और उ-लमाअ की तलकीर कुइ है. (इतावा २-जविय्या, जिल्द:14, स-इला:244) (3) कुकडाअे किराम **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ** इरमाते हैं : “**يَا'نِي** **الْإِسْخَفَاتِ بِالْأَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ** : सादात व उ-लमाअ की तप्फीफ व तलकीर कुइ है. (मखमडल अनडर, जिल्द:2, स-इला:509, डोईटा)

मुज को अै अतार सुन्नी आलिमों से प्यार है

डो खडों में **إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** अपना बेडा पार है

मुसलमानों का दिल पुश कीजिये

क्या ही अच्छा हो के सभी का मन्ज़ूर शुदा वोही पुराना मुतकिफ़ा अन्दाज़ अपना लिया जाये ताके अेक बार फिर सारे ही सुन्नी ना'त प्वानी के तअद्लुक से मुतखिद, मुत्मर्दन और पुश हो जाअें और गुनाहों और नफ़रतों का सिखिसिवा बन्द हो. अेहतिरामे मुस्लिम और मुसल्मान का दिल पुश करने की अहम्मियत का अन्दाज़ा इतावा र-जविय्या तप्रीज शुदा की जिल्द:7, स-इला:230 पर मौजूद मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ के इस मुबारक इतवे से लगाईये. युनान्हे कुछ इस तरह सुवाल हुवा के जमाअत का मुकर्ररा वक्त हो गया, एतने में मज़ीद दो यार नमाज़ी आ गअे मगर उन के वुजू से फ़ारिग होने से पहले ही जमाअत षडी हो गई. आया उन का एन्तिज़ार करना याहिये था या नहीं? इस का जवाब देते हुअे मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ ने इरमाया :

“येह दो यार शप्स जो बा'द को आअे और उन के वुजू कर लेने का एन्तिज़ार न किया और जमाअत काथम कर दी. अगर येह लोग अहले मडल्ला से न थे, उन्हें जमाअत के वक्ते मुकर्ररा का एल्म न था और वक्त में तंगी भी न थी और हाज़िरीन में किसी पर एन्तिज़ार से कोई ज़रर उ-रज भी न था तो इस सूरत में उन के वुजू से फ़ारिग हो लेने का एन्तिज़ार कर लेना मुनासिब था. पुसूसन जब के इस एन्तिज़ार न करने में उन की दिल शिकनी हो के बिला वजह किसी मुसल्मान की दिल शिकनी बडोत सप्त बात है. दो यार मिनट में वुजू हो जाअेगा, इस में उन (देर से आने वालों) का अेक नफ़्अ और अपने (या'नी एन्तिज़ार करनेवाले) एमाम व मुक्तदियों के) तीन मनाफ़ेअ, उन का (नफ़्अ) तो येह के तकबीरे उिला पा देंगे और अपना (1) पहला नफ़्अ येह के उस (तकबीरे उिला की) इज़ीलत मिलने में मुसल्मानों की एआनत (मदद) हुई और इस का अज्जे अजीम है. कालल्लाहु तआला (या'नी अल्लाह तआला عَزَّوَجَلَّ इरमाता है:)

تَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى

(पारह:6, अल माईदा:2) (तर्जमअे कन्ज़ुल एमान: नेकी और परहेजगारी पर अेक दूसरे की मदद करो) यहां तक के अैन नमाज़ में एमाम को याहिये के अगर रुकूअ में किसी की पहयल (कदमों की याप) सुने और उसे पहयाना नही तो दो अेक तस्बीह ज़ियादा कर दे तो वोह शामिल हो जाअे. (2) हुवुम (नफ़्अ) इस रियाअत (व एन्तिज़ार) से उन मुसल्मानों का दिल पुश करना. मुतअदद अहादीस में है : इराईज के बा'द सब आ'माल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा मुसल्मान का दिल पुश करना है.” (अल ज़मेउससगीर मअ इज़ुव कदीर, जिल्द:1, स-इला:167, उदीस:200, दाउल मारेफ़ा, बैरूत) (3) (तीसरा नफ़्अ उन के आने तक नमाज़ का एन्तिज़ार करने के सभब मिलने वाला सवाब है युनान्हे) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का एशदि मुबारक है : “बेशक तुम नमाज़ ही में हो जब तक नमाज़ के एन्तिज़ार में हो.” (बुभारी, जिल्द:1, स-इला:84,90 कदीमी कुतुब खाना, भाधुल मदीना करावी)

सय है एन्सान को कुछ षो के मिला करता है

आप को षो के तुजे पाअेगा ज़ोया तेरा

ज़िक़ वाली ना'त प्वानी से भी तो दिल पुश होते हैं

सुवाल : भानियाने मजलिस या सामेथन इरमाईश करें तो एन मुसल्मानों का दिल पुश करने की नियत से नीज़ मोडर्न नौ जवान इस बहाने मडफ़िले ना'त में आ जाते हों इस वजह से अगर ज़िक़ वाली ना'त प्वानी कर ली तो क्या उ-रज है ?

जवाब : बेशक मुसल्मानों का दिल पुश करना नीज़ मोडर्न नौ जवानों को दीन के करीब लाना भूबियां हैं मगर ज़िक़ वाली ना'त प्वानी करने से मुसल्मानों में नफ़रतें इल रही हैं जो के बडोत बडी ज़राबियां हैं और ज़राबियों के अस्बाब से बयने के लिये भूबियों के अस्बाब का लिहाज़ नही किया जाअेगा. इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समजिये के अगर नफ़्अ हासिल करने की खातिर नुकसान उठाना पडता हो तो उस नफ़्अ को तर्क करना होगा. जैसा के मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ शरीअते मुतइडरा का काईदा बयान करते हुअे इरमाते हैं : ذَرُّهُ النَّفْسَ إِذْ هُمْ مِنْ حَلَبِ النَّصَالِحِ या'नी ज़राबियों के अस्बाब दूर करना भूबियों के अस्बाब हासिल करने से अहम्म है. (इतावा र-जविय्या, जिल्द:9, स-इला:155)

मैं समजता हूं जिन्होंने जवाज़ का इतवा एनायत इरमाया है उन उ-लमाअे किराम को भी अगर ज़िक़ वाली ना'त प्वानियों के सभब सीनों के मा बैन उठ षडे होनेवाले नफ़रतों और अदावतों के तूफ़ान का एल्म हो गया या एन उजरत की बिदमात में सूरते डाल बयान की गई तो वोह भी डालात के पेशे नज़र ज़िक़ वाली ना'त प्वानी की अब इरगिज़ एज्जत नही देंगे.

ना'त प्वानों से हाथ जोड़ कर म-दनी धलिज

मेरा हुस्ने ज़न है के इर सुन्नी ना'त प्वान मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ का याहने वाला है और हुस्ने एत्तिफ़ाक से ज़िक़ के साथ ना'त शरीफ़ पढनेवालों की गाविब अक्सरियत मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ ही के सिखिसिले में बैअत भी है और सआदतमन्द मुरीदों के लिये अपने मुशिद का अेक ही एशारा काफ़ी है मगर हमारे

पीरो मुर्शिद सरकारे आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ का ओक ईशारा नहीं मुतअदद ईशारात मिल युके हैं जिन की रौशानी में जिक्र वाली ना'त प्वानी का तर्क ज़रूरी हो गया के ईस की वजह से न सिर्फ़ इत्ने का ईम्कान बल्के इत्ना वाक़ेअ भी हो युका. उम्मत की भैरपवाडी के जज़्बे के तहत मेरी तमाम ना'त प्वानों से छाथ जोड कर, पांव पकड कर म-दनी ईद्विजा है कोई भी ना'त प्वान ईस्लामी भाई आईन्दा जिक्रवाली ना'त शरीफ़ की तरकीब न बनाये. बिलइर्ज़ कोई ना'तप्वान ऐसा निकल भी आये जो मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ الرَّبِّ الْعَزِيزِ के इरमूदात और इतावा र-जविय्या शरीफ़ के बयान कर्दा जुजुईयात से अदमे ईत्तिफ़ाक के सबभ या फिर अपने नफ़्स के छाथों मजबूर हो कर जिक्र वाली ना'त प्वानी से बाज न आये तब भी दीगर ना'त प्वान ईस्लामी भाई उस की रीस न इरमायें. उस से उल्हें भी नहीं और उस की हिल आज़ारी से भी बाज रहें. जिन ईस्लामी भाईयों के घरों में समाअत के लिये या हुकानों में तिज़ारत के लिये जिक्रवाली ना'तों की केसेटें हैं उन से भी म-दनी ईद्विजा है के थोडा सा माली भसारा भरदाशत करते हुये उन में सादा ना'तें या बयानात उभ करवा लें और इत्ना व इसाद का दरवाजा बन्द करवाने में मेरी ईम्दाद इरमायें.

दुआये अतार

या रब्बे मुस्तफ़ा صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हमारे ना'त प्वानों को मुरव्वज्ज जिक्रवाली ना'त प्वानी से बाज आने, और ईस्लामी भाईयों को ऐसी ना'तों की तमाम केसेटों में सादा ना'तें या सुन्नतों त्भरे बयानात उभ करवा लेने की सआदत अता इरमा. उन सब को और उन के सदके में मुज पापी व बदकार को मदीने के ताजदार हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का भार भार दीदार नसीब इरमा. या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारी कब्रों में म-दनी मडभूब صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जल्वे हों और मडशर में शफ़ाअत की भैरात मिले, या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जन्नतुल फिरदौस में हम सब को हमारे भीठे भीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडौस ईनायत इरमा.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जिन्दगी त्भर धूम ना'तों की मयाते जायेंगे
या रसूलद्लाह ﷺ का ना'रा लगाते जायेंगे

ओक थुप सौ थुप



तालिबे गमे मदीना

व बकीअ व मजिदरत व

बे हिसाब

जन्नतुल फिरदौस

में आका का पडौस

8 र-जबुल मुरज्जब सिने 1427 हिजरी

गीमत का अज़ाब

भीठे भीठे आका صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : “में शभे मे'राज ऐसी कौम के पास से गुज़रा जो अपने येडरों और सीनों को तांभे के नाभुनों से छील रहे थे. मैंने पूछा, ऐ जिब्रईल ! येड कौन लोग हैं ? कहा, येड लोगों की गीमत करते और उन की ईज़्जत भराब करते थे.” (सुनने अबी दावूद शरीफ़, जिल्द:2, स-इहा:313)

बोहतान का अज़ाब

जो शप्स किसी मुसल्मान पर बोहतान लगाये (या'नी ऐसी थिज़ कहे जो उस में नहीं) तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रदगतुल ખબाल में उस वक्त तक रभेगा जब तक उस की सज़ा पूरी न हो ले. (अबू दावूद, जिल्द:3, स-इहा:297)

(रदगतुल ખબाल जहन्नम में ओक मक़ाम है जहां दोज़बियों का भून और पीप जम्म होगा.)

येह रिसाला पढ कर दूररे को दे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, अअ्रास और जुलूसे भीलाद वगैरा में मक़त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इल्लों पर मुशतमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों को ब निय्यते सवाब तोलई में देने के लिये अपनी हुकानों पर भी रसाईल रभने का मा'मूल बनाईये, अख़बार इरोशों या बय्यों के ज़रीअे अपने मडल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम ओक अदद सुन्नतों त्भरा रिसाला या म-दनी इल्लों का पेम्फ्लेट पडोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये.

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ!